कार्य केन्द्रित शिक्षा संचालन में शिक्षकों की भूमिका

दूसरे शब्दों में कार्य शिक्षा वह उद्देश्यपूर्ण और सार्थक शारीरिक श्रम माना गया है, जो शिक्षा के अन्तरंग भाग के रूप में आयोजित किया जाता है। यह अर्थपूर्ण सामग्री के उत्पादन और समुदाय की सेवा के रूप में परिकल्पित होता है। कार्य-केन्द्रित शिक्षा को चलाने में अध्यापकों की भूमिका को निम्न प्रकार के माध्यम से समझा जा सकता है—

(1) बालकों के लिए ऐसे कार्य को चुनें जो बच्चे की सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति का हिस्सा हो। कार्य का चयन करते समय संसाधनों की उपलब्धता और बालकों के बौद्धिक स्तर का ध्यान रखें।

(2) कार्य करने के लिए सामग्री और संसाधन जुटाएं।

(3) बच्चों के साथ उनके कार्यों में शामिल हों।

(4) अध्यापकों को कुछ कार्यक्षमताओं की सूची बनानी चाहिए, जिसमें बच्चों के सामाजिक गुण, शैक्षणिक गुण या भावात्मक गुण शामिल हो सकते हैं। इन्हें बच्चों के मूल्यांकन के लिए प्रयोग में लगाया जाना चाहिए।

(5) माता-पिता और समुदाय का मार्गदर्शन करें।

(6) बालकों को कार्य उनकी जाति, धर्म, लिंग या बच्चे की सामाजिक स्थिति के हिसाब से नहीं दिया जाना चाहिए।

(7) बालकों को दिये जाने वाले कार्य के आधार पर उनके भविष्य, पेशे या कमाई के साधन तय नहीं किए जाने चाहिएँ।

(8) सभी बालकों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किये जाने चाहिएँ।

कार्य-शिक्षा की महत्ता
(Significance of Work Education)

(1) मानसिक विकास में सहायक।

(2) सामाजिक रूप से वांछनीय मूल्यों का विकास करने में मदद मिलती है।

(3) बालकों को भावी जीवन के लिए तैयार करती है।

Scanned with CamScanner

(4) कार्य-शिक्षा विद्यार्थी में आवश्यक जीवन-कौशलों, यथा समस्या-समाधान, निर्णय लेना, सृजनात्मक सोच, समालोचनात्मक सोच, तदानुभूति, प्रभावी संप्रेषण, स्वयं की पहचान जैसे कौशलों का विकास करने में सहायता करती है।
(5) कार्य-शिक्षा जगत से शिक्षा की सम्बद्धता स्थापित करती है।
(6) बालकों में नेतृत्व प्रदान करने के कौशल को विकसित करती है।
(7) बालकों में आत्मविश्वास का विकास होता है।
(8) आत्मनिर्भरता के गुण पनपते हैं।
(9) बालकों में रचनात्मक क्रियाकलापों के प्रति रुझान बढ़ता है।
(10) बालकों में सृजनात्मकता का विकास होता है।
(11) सांस्कृतिक विरासत स्थानीय व राष्ट्रीय दोनों की सहायता करने की क्षमता तथा संरक्षण की भावना को पोषित करती है।
(12) शारीरिक कार्य और श्रम के महत्त्व के प्रति समझ व सम्मान की भावना पैदा होती है।
(13) कार्य-शिक्षा के जरिए बालक सामुदायिक स्वच्छता बनाए रखने के प्रति सचेत व सजग होते हैं।
(14) शारीरिक कार्य और श्रम के महत्त्व के प्रति समझ व सम्मान की भावना पैदा होती है।

कार्य-केन्द्रित शिक्षा में अध्यापक की भूमिका
(Role of Teacher in Work Centered Education)

(1) बच्चों के लिए उत्पाद संबंधी ऐसे कार्य को चुनें, जो बच्चे की सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति का हिस्सा हो। काम का चयन करते समय बच्चे के बौद्धिक स्तर का ध्यान रखें।
(2) कार्य को करने के लिए सामग्री और संसाधन जुटाएं।
(3) बालकों को उन कार्य-कलापों से अवगत कराएं या उन कार्यों का नमूना करके दिखाएं जो आप उनसे करवाना चाहते हैं। साथ ही, उन्हें यह भी बताएं कि वे इस कार्य को करने से क्या सीखेंगे?
(4) अध्यापक बालकों के साथ उनके कार्यों में शामिल हों।
(5) अध्यापक को कुछ कार्य क्षमताओं की सूची बनानी चाहिए, ताकि वे हर बच्चे के लिए लक्ष्य तय कर सकें। इन गुणों में सामाजिक गुण, शैक्षणिक गुण या भावात्मक गुण शामिल हो सकते हैं।
(6) बालकों का मूल्यांकन उनके 'समूह में काम करने की क्षमता', औजारों का इस्तेमाल करने में उनका विश्वास और 'काम में शामिल होने में उत्साह' के आधार पर करें। मूल्यांकन बच्चे के कामकाज की प्रक्रिया का होना चाहिए न कि कार्य के बारे में किताबी ज्ञान का।

कार्य शिक्षा का प्रबंधन
(Management of Work Education)

स्कूल के सभी अध्यापकों को कक्षा में कार्य को शिक्षा देने वाले उपकरणों के रूप में समझने व प्रयोग करने की जरूरत है। कार्य को स्कूल टाइम-टेबल का एक अहम हिस्सा बनाने के लिए स्कूल टीम का होना जरूरी है, ताकि बुनियादी समस्याओं और मुद्दों को वे समझ सकें।

अध्यापक को भी कार्य-केन्द्रित शिक्षा की योजना बनाने के लिए मार्गदर्शन की जरूरत होती है। नीचे कुछ दिशा-निर्देश दिए गए हैं—

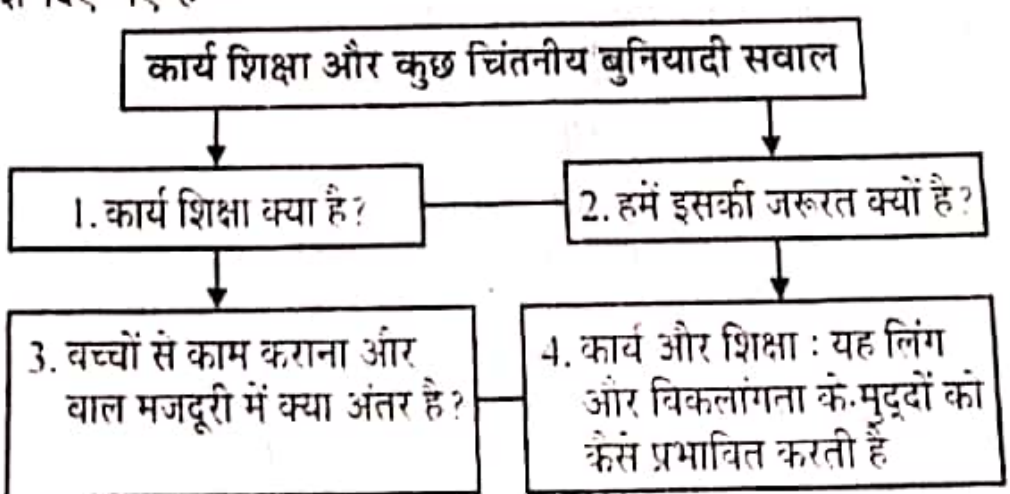

Scanned with CamScanner

कार्य-केंद्रित कक्षा को चलाने के लिए, अध्यापकों को नीचे दी गई बातों का ध्यान रखने की जरूरत है—

(1) बच्चों के लिए उत्पाद संबंधी ऐसे कार्य को चुनें, जो बच्चे की मानसिक-आर्थिक परिस्थिति का हिस्सा हो। काम का चयन करते समय संसाधनों की उपलब्धता और बच्चे के बौद्धिक स्तर का ध्यान रखें।

(2) कार्य को करने के लिए सामग्री और संसाधनों को जुटाएँ। सामग्री और संसाधन जुटाने के लिए अध्यापक को समुदाय या दूसरे संस्थानों से मदद की जरूरत पड़ सकती है, जहाँ जरूरी सामग्री या व्यक्ति मौजूद हो सकता है।

(3) बच्चों को उन कार्य-कलापों से अवगत कराएँ या उन कामों का नमूना करके दिखाएँ, जो आप उनसे करवाना चाहते हैं। साथ ही, उन्हें यह भी बताएँ कि वे इस कार्य को करने से क्या सीखेंगे।

(4) बच्चों के साथ उनके कार्यों में शामिल हों। ऐसा न लगे कि अध्यापक सिर्फ उन्हें दिशा-निर्देश देने के लिए हैं या सिर्फ उन्हें पढ़ाने के लिए हैं।

(5) अध्यापक को कुछ कार्य क्षमताओं की सूची बनानी चाहिए, ताकि वे प्रत्येक बच्चे के लिए लक्ष्य तय कर सकें। इन गुणों में सामाजिक गुण, शैक्षणिक गुण या भावात्मक गुण शामिल हो सकते हैं। इन्हें बच्चों के मूल्यांकन के लिए प्रयोग किया जाएगा।

(6) बच्चों का मूल्यांकन उनके 'समूह में काम करने की क्षमता', 'औजारों का प्रयोग करने में उनका विश्वास' और 'काम में शामिल होने में उत्साह' के आधार पर करें। मूल्यांकन बच्चे के कामकाज की प्रक्रिया और उनके रिश्तों का होना चाहिए न कि कार्य के बारे में किताबी ज्ञान का।

श्रम की अवधारणा
(Concept of Labour)

श्रम करना सम्मानीय होता है परन्तु आज पाठ्यक्रम में इसके लिए लगभग कोई जगह है ही नहीं। श्रम करना, भारतीय परिवेश में बालकों के बचपन का हिस्सा रहा है। बच्चे अनेक तरह के घरेलू कार्यों से जुड़ जाते हैं, जैसे खाना पकाना, सफाई करना, बागवानी, खेती, मिट्टी के बरतन बनाना, बढ़ईगिरी के काम, विभिन्न उत्पादों की सिलाई, बुनाई, मछली पालन आदि। स्कूल का कार्यक्रम और माहौल पूरी तरह से पाठ्यपुस्तक केंद्रित होने के कारण श्रम स्कूली पाठ्यक्रम में एक व्यक्तिगत अभिरुचि (हॉबि) तक ही सीमित रह गया है। आज के स्कूल की शिक्षण-अध्ययन प्रक्रिया में इस तरह के विविध कार्यों के लिए लिए कोई स्थान नहीं है। स्कूल हाथ से किये जाने वाले श्रम के महत्त्व का अवमूल्यन करता है, जिसके चलते बालकों के मन में श्रम के प्रति उपेक्षा भाव उत्पन्न हो जाता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि श्रम को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाये। तीसरी कक्षा से दसवीं कक्षा के लिए स्कूली समय सारिणी में बालकों के कार्यों को देने की आवश्यकता है ताकि कार्यों के प्रति उनकी रुचि बढ़े और उन्हें श्रम के अंतर्निहित शैक्षणिक सामर्थ्य का भी एहसास हो सके।

श्रम : अर्थ एवं परिभाषा
(Labour : Meaning and Definition)

श्रम से सरल अर्थ में तात्पर्य है कि एक कठिन श्रम से किए जाने वाला कार्य। दूसरे शब्दों में श्रम से कुछ मौद्रिक पुरस्कारों के लिए किए गए शारीरिक या मानसिक कार्य जो आय प्राप्त करने के लिए नहीं अपितु आनंद या खुशी प्राप्त करने के लिए भी किया जाये। उदाहरण के लिए बगीचे में एक माली के काम को श्रम कहा जाता है क्योंकि वह इसके लिए आय प्राप्त करता है लेकिन अगर वही काम उसके घर के बगीचे में किया जाता है, तो उसे श्रम नहीं कहा जाएगा, उसे उसकी व्यक्तिगत अभिरुचि कहा जायेगा। उदाहरण के लिए स्कूल में पढ़ाने के लिए शिक्षक की योग्यता को घर पर लाना संभव नहीं है। एक शिक्षक का श्रम तभी काम कर सकता है जब वह स्वयं कक्षा में उपस्थित हो।

जेवंस (Prof. Jevons) के अनुसार, *"श्रम मन या शरीर का आंशिक रूप से किया गया कार्य है जो काम से सीधे प्राप्त होने वाले आनंद के अलावा किसी और चीज के लिए पूर्ण रूप से या पूरी तरह से किया गया कार्य है।"* 1

1. प्रो॰ जेवंस।

Scanned with CamScanner